BA-I

Paper - I

Unit - 5

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID :- rajgopal7255@gmail.com

Jain : Theory of Syadvada
(जैन दर्शन :- स्याद्वाद सिद्धान्त)

स्याद्वाद जैन दर्शन के प्रमाणशास्त्र से संबंधित सिद्धान्त है। जैन तत्वमीमांसा अनेकान्तवादी है जिसमें वस्तु "अनन्तधर्मात्मक" मानी गयी है। अतः प्रत्येक वस्तु में अनन्त गुण होते हैं। मनुष्य वस्तु के कुछ गुणों का ज्ञान ही एक समय में पा सकता है। इसे नयवाद भी कहते हैं। नय पूरी वस्तु को न समझकर उसके अंश को समझना है। इस प्रकार से वस्तु के अनन्त गुणों का ज्ञान मुक्त व्यक्ति के द्वारा ही संभव है। साधारण मनुष्यों का ज्ञान अपूर्ण एवं आंशिक होता है। अतः नय किसी वस्तु के समझने का विभिन्न दृष्टिकोण है इससे सापेक्ष सत्य की प्राप्ति होती है। स्याद्वाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है।

स्यात् शब्द का शाब्दिक अर्थ "हो सकता है या शायद होता है" होता है। इस प्रकार से स्यात् शब्द से ज्ञान की संदिग्धता का बोध होता है। जैन दर्शन में स्यात् शब्द ज्ञान की सापेक्षता का द्योतक है। स्यात् शब्द से यह ज्ञात होता है कि किसी वस्तु के सन्दर्भ में हमारा परामर्श

एक दृष्टिकोण विशेष पर आधारित होता है। वह परामर्श किसी विशेष परिस्थिति, देश काल के सन्दर्भ में है। इस प्रकार किसी विशेष परिस्थिति देश काल के सन्दर्भ में यह सत्य है, तो अन्य परिस्थिति एवं देश काल के सन्दर्भ में वह ज्ञान असत्य भी हो सकता है। इस प्रकार से जैन दार्शनिक अपने विचारों को दोषमुक्त दिखाने के लिए एवं विचारों में संभावना बनाये रखने के लिए स्यात् शब्द का प्रयोग करते हैं।

जैन दार्शनिक स्याद्वाद सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए "अन्धे और हाथी की कहानी" का उदाहरण देते हैं। छः अन्धे आदमी एक हाथी को अलग-अलग अंगो को स्पर्श करके हाथी का वर्णन करता है। पहला अन्धा हाथी के पैर का स्पर्श करके कहता है कि "हाथी खम्भे के समान है"। दूसरा अन्धा हाथी के सूँड का स्पर्श करके कहता है कि हाथी अजगर के समान है। तीसरा अन्धा हाथी के कान का स्पर्श करके कहता है कि हाथी पंखे के समान है। चौथा अन्धा हाथी के पेट का स्पर्श करके कहता है कि हाथी दिवार के समान है इत्यादि। प्रत्येक अन्धा सोचता है कि केवल उसी का हाथी विषयक वर्णन सत्य है, शेष गलत है। स्पष्टतः अन्धो के हाथी विषयक वर्णन मे मतभेद का कारण दृष्टिभेद है।

Scanned with CamScanner

जब इन अन्धों को समझाया जाता है कि उन्होंने हाथी के अलग-अलग अंगों का स्पर्श करके हाथी का वर्णन किया है तो उनका मतभेद दूर हो जाता है। जैन दार्शनिक इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि विभिन्न दार्शनिकों एवं उनके सिद्धान्तों के मध्य विवाद का कारण दृष्टिभेद है। प्रत्येक दार्शनिक सिद्धान्त, मत आदि उस दृष्टिकोण के आधार पर सत्य है जिसके अनुसार उसका प्रतिपादन हुआ है। यद्यपि अन्य दृष्टिकोण से वह असत्य भी हो सकता है।

स्याद्वाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है। इसका अर्थ यह है कि सीमित बुद्धियुक्त मानव किसी वस्तु के सन्दर्भ में जो परामर्श करता है वह किसी विशेष प्रसंग एवं परिस्थिति में सत्य होता है। यह सिद्धान्त यह बतलाता है कि मानव ज्ञान प्रसंग सापेक्ष है। अतः न कोई ज्ञान पूर्ण सत्य है और न पूर्ण असत्य। प्रत्येक ज्ञान में सत्यता होती है परन्तु यह सत्यता किसी विशेष परिस्थिति पर आधारित होता है। अतः मानव द्वारा अर्जित ज्ञान आपेक्षिक सत्य ही होते हैं।

Scanned with CamScanner